02-06-2023

एक दशक के कार्यकाल में एनएसआई निदेशक ने गिनाई उपलब्धियां

छात्रों और संस्थान को विश्व पटल पर चमकाना ही मेरा मकसद: नरेन्द्र मोहन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने बीते एक दशक के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है और अब विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। यह बात एन.एस.आई. निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने पत्रकार वार्ता के दौरान कही। एनएसआई निदेशक नरेंद्र मोहन ने अपने 10 वर्ष का कार्यकाल पूरा किया है और इस अवसर पर वह पत्रकारों से रूबरू थे। वार्ता के दौरान उन्होंने बताया कि जब सन 2012 13 में उन्होंने पद संभाला था तब संस्थान का राजस्व मात्र 30 लाख था जो आज बढ़कर 2022 23 में 6करोड़ 40 लाख रुपए हो गया है। साथ ही उन्होंने कहा कि अपने 1 दशक के कार्यकाल में उन्होंने लगभग 14 पेटेंट फाइल किए जिसमें कि 5 अब तक स्वीकृत हो चुके हैं और कई बहुत जल्दी स्वीकृत होने वाले हैं। आगे बताया कि पद संभालने के बाद उन्होंने यहां पर चल रहे पाठ्यक्रम में कई बदलाव किए और यहां की चीनी मिल, जो की खस्ताहाल में पड़ी हुई थी उसे भी छात्रों के व्यवहारिक ज्ञान के लिए चालू कराया। कार्यकाल के दौरान उन्होंने शिक्षण और प्रशिक्षण सुविधाओं को काफी हद तक उन्नत किया और यहां के क्लास को स्मार्ट क्लासरूम, इंटरएक्टिव सेमिनार रूम और अंतरराष्ट्रीय प्रोटोकॉल के मुताबिक विश्लेषण करने के लिए छात्रों की प्रयोगशाला भी सुसज्जित करवाई। साथ ही कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने के लिए लगभग 200 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता वाला अति आधुनिक प्रशिक्षण के दौरान बनाया गया। नई-नई प्रयोगशाला स्थापित करने के साथ ही पर्यावरण विज्ञान, अल्कोहल टेक्नोलॉजी, औद्योगिक उपकरण के साथ-साथ उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन और इंडस्ट्रियल इंस्ट्रूमेंटेशन पर कई पाठ्यक्रम भी शुरू करे। आगे बताया कि मिस्त्र,नाइजीरिया, इंडोनेशिया और केन्या के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जबकि क्यूबा और फिजी के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में पहुंच गई है। विश्व के कई देशों के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी एनएसआई द्वारा आयोजित किए गए हैं जिसमें नाइजीरिया, केन्या, भूटान, नेपाल, श्रीलंका और इंडोनेशिया प्रमुख हैं। साथ ही यह भी कहा कि कभी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे इस संस्थान को अब विश्व स्तर पर ख्याति मिल रही है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अब आगे वह इस संस्थान को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने एवं छात्रों को विश्व पटल पर तैयार करने के लिए कार्यरत रहेंगे। साथ ही यह भी कहा कि मैं राष्ट्रीय शर्करा संस्थान को सर्वोच्च स्तर पर देखना चाहता हूं।

'NSI has made its presence felt globally'

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

The National Sugar Institute (NSI) during the last 10 years has made its presence felt globally as large number of sugar producing countries are looking towards it to meet training requirements for technical manpower required for sugar and allied industry and for modernisation of their units. This was stated by its Director Prof Narendra Mohan while addressing the press and the NSI officials on Thursday. He said in a decade of his leadership of the institute MoUs had been signed with Egypt, Nigeria, Indonesia and Kenya, while the process of signing MoUs with Cuba and Fiji were in the final stages. He said the NSI had also conducted teaching and training programmes for many countries, mainly Nigeria, Kenya, Yemen, Bhutan, Nepal, Sri Lanka and Indonesia.

NSI Director, Prof Narendra Mohan, addressing presspersons

He said teaching and training facilities had been upgraded to a great extent with addition of sugar refining unit, specialty sugar division, ethanol unit and brewery. He said it is the only institute perhaps in the world to have such facilities for hands-on training and added that today it had smart classrooms, interactive seminar rooms and students' laboratories to perform analysis as per international protocols.

Prof Mohan said NSI kept a close watch on industry requirements and to cope with same new courses on Quality Control, Environment Science, Sugarcane Productivity and Maturity Management and Industrial Instrumentation were introduced during the last 10 years and added the new laboratories for environment science and industrial instrumentation were set up to meet the requirement. He said the NSI had also extended library facilities in boys' and girls' hostels to facilitate students to refer to books even at late hours and during holidays.

He said the Institute proved its worth by developing many innovative processes and products out of the byproducts and waste from the industry. He said the institute not only filed patents but for the exemplary work carried out, many recognitions came from national and international organisations. He said currently R&D laboratories at the institute had world class facilities and the same had been praised by various foreign delegations too.

Prof Mohan said the institute worked in all directions and many other infrastructural facilities had been developed during the period which included construction of hostels, outdoor stadium, development of open gym and children park. He said with the installation of 300 KW roof top-based solar power system and water harvesting, it is a clean and green campus. He said revenue generation also gives a broad measure about activities of the institute and claimed that the same was meagre ₹30 lakh in 2012-13 which escalated to ₹640 lakh by 2022-23.

दस साल में एनएसआई का राजस्व 30 लाख से छह करोड़ 40 लाख हुआ

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। 10 साल में नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) देश के शर्करा समूहों को नई तकनीकें देने के साथ विश्व के दूसरे देशों को शर्करा उद्योग में आगे बढ़ाने के लिए सहयोग कर रहा है। मिस्र, नाइजीरिया, इंडोनेशिया, केन्या आदि देशों के साथ इंस्टीट्यूट ने एमओयू किया है।

प्रोफेसर नरेंद्र मोहन

यह बात एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने अपने कार्यकाल के 10 साल पूरे होने पर पत्रकारों से कही। उन्होंने कहा कि वर्ष 2012-13 में एनएसआई का राजस्व सिर्फ 30 लाख रुपये था। वर्ष 2022-23 में राजस्व बढ़कर छह करोड़ 40 लाख रुपये हो गया है। बताया कि संस्थान ने कई नवीन प्रक्रियाओं, उद्योग के सह उत्पादों तथा कचरे से उत्पादों को विकसित करके अपनी उपयोगिता साबित की है।

गुणवत्ता नियंत्रण, पर्यावरण विज्ञान, गन्ना उत्पादकता, परिपक्वता प्रबंधन, औद्योगिक प्रबंधन पर नए पाठयक्रमों की शुरुआत की गई है। तीन सौ किलोवॉट रूफ टॉप आधारित सौर ऊर्जा प्रणाली की स्थापना की गई है।

एनएसआई ने 10 वर्षों में विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई

हम उद्योग की आवश्यकताओं पर कड़ी नजर रखते हैं : प्रो. नरेंद्र मोहन

कानपुर, 1 जून। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) ने पिछले 10 वर्षों में विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। आज बड़ी संख्या में चीनी उत्पादक देश चीनी और संबद्ध उद्योग के लिये आवश्यक तकनीकी मानव शक्ति की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने और अपनी इकाइयों के आधुनिकीकरण के लिये संस्थान की ओर देख रहे हैं। यह बात एनएसआई, कानपुर के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने गुरुवार को कही। वे निदेशक के रूप में अपना दस वर्ष का कार्यकाल पूरा होने पर मीडिया से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि दस वर्ष की अवधि के दौरान मिस्र, नाइजीरिया, इंडोनेशिया और केन्या के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये हैं और क्यूबा व फिजी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। उन्होंने कहा कि हम उद्योग की आवश्यकताओं पर कड़ी नजर रखते हैं। पिछले दस वर्षों के दौरान गुणवत्ता नियंत्रण, पर्यावरण विज्ञान, गन्ना उत्पादकता, परिपक्वता प्रबंधन और इंडस्ट्रियल इंस्ट्रूमेंटेशन पर नये पाठ्यक्रमों की शुरुआत की गई है। हमने लड़कों और लड़कियों के छात्रावासों में पुस्तकालय सुविधाओं का भी विस्तार किया है, ताकि विद्यार्थियों को छुट्टियों के दौरान भी किताबें पढ़ने की सुविधा मिल सके। उन्होंने बताया कि संस्थान ने कई नवीन प्रक्रियाओं और उद्योग के सह उत्पादों व कचरे से उत्पादों को विकसित कर अपनी उपयोगिता साबित की है।

प्रेस वार्ता करते एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

छात्रावासों में किया गया है पुस्तकालय सुविधाओं का विस्तार

दस वर्षों में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर ने हासिल की विशेष उपलब्धियां–नरेन्द्र मोहन

कानपुर नगर– गुरुवार को एक प्रेस वार्ता के दौरान राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के निदेशक नरेंद्र मोहन ने अपने 10 वर्ष के कार्यकाल पूरे होने पर संस्थान की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी उन्होंने बताया कि आज बड़ी संख्या में चीनी उत्पादक देश चीनी और संबंध उद्योगों के लिए आवश्यक तकनीक मानव शक्ति की परीक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने और अपने इकाइयों के आधुनिकीकरण के लिए संस्थान की ओर देख रहा है उन्होंने बताया मिस्त्र नाइजीरिया इंडोनेशिया और केन्या के साथ

किए गए जबकि क्यूबा और शिवजी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की प्रक्रिया

अंतिम चरण में है उन्होंने बताया कि कई देशों के लिए प्रशिक्षण

आयोजित किए गए जैसे नाइजीरिया केन्या यमन भूटान नेपाल श्रीलंका और इंडोनेशिया

संस्थान ने सभी दिशाओं में काम किया इस अवधि के दौरान कई

विकास किया गया जिसमें छात्रावास का निर्माण ऑडिटोरियम स्टेडियम ओपन जिम चिल्ड्रंस पार्क का विकास शामिल है गुणवत्ता नियंत्रण पर्यावरण विज्ञान गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन एवं औद्योगिक नियंत्रण पर नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए योगिक चीनी कारखाने में चीनी रिफाइनरी की और विशेष चीनी प्रभात की स्थापना की गई छात्रावासों में पुस्तकालय सुविधा का विस्तार किया गया नैनो इथेनॉल इकाई और ब्रीवरी की स्थापना की गई निदेशक नरेंद्र मोहन द्वारा अपने 10 वर्ष के कार्यकाल पूरे होने पर संस्थान

दस साल में बीस गुना बढ़ी शर्करा संस्थान की आय

कानपुर (एसएनबी)। बीते दस सालों में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के राजस्व सृजन में बीस गुना से भी अधिक वृद्धि हुयी है और यह 30 लाख सालाना से 640 लाख सालाना हो गया है। संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने बताया कि आज बड़ी संख्या में चीनी उत्पादक देशों को संस्थान से तकनीकी मानवशक्ति प्रशिक्षण के सम्बंध में मदद मिल रही है।

संस्थान के निदेशक के रूप में अपने कार्यकाल के दस वर्ष पूरे होने पर पत्रकारों से बात करते हुए नरेन्द्र मोहन ने उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बीते दस वर्षों में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। आज बड़ी संख्या में चीनी उत्पादक देश, चीनी और सम्बद्ध उद्योग के लिये आवश्यक तकनीकी मानवशक्ति प्रशिक्षण की जरूरतों को पूरा करने और अपनी चीनी इकाइयों के आधुनिकीकरण के लिये संस्थान की ओर देख रहे हैं। दस वर्ष की अवधि में संस्थान ने मिस्र, नाइजीरिया, इंडोनेशिया और केन्या के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। जबकि क्यूबा और फिजी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। उन्होंने बताया कि संस्थान ने कई देशों

निदेशक नरेंद्र मोहन।

■ दुनिया भर के चीनी कारखानों को तकनीकी मदद दे रहा है संस्थान

के लिये शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किये हैं। इनमें नाइजीरिया, केन्या, यमन, भूटान, श्रीलंका और इंडोनेशिया जैसे देश शामिल हैं। उन्होंने बताया कि शुगर रिफाइनरी, स्पेशिलिटी शुगर डिवीजन, इथेनॉल इकाई और बियर यूनिट को जोड़ कर शिक्षण और प्रशिक्षण सुविधाओं को काफी हद तक उन्नत किया गया है। संभवतः यह दुनिया का अकेला ऐसा संस्थान है, जहां

व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिये इस तरह की सुविधाएं हैं। वर्तमान में संस्थान के पास स्मार्ट क्लासरूम, इंटरेक्टिव सेमिनार रूम और अंतर्राष्ट्रीय प्रोटोकॉल के अनुसार विश्लेषण करने के लिये छात्रों की प्रयोगशालाएं हैं। कम अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने के लिये 200 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता वाला अति आधुनिक प्रशिक्षण केन्द्र भी बनाया गया है। उन्होंने बताया कि बीते दस वर्षों में गुणवत्ता नियंत्रण, पर्यावरण विज्ञान, गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन और इंडस्ट्रियल इंस्ट्रूमेंशन पर नये पाठ्यक्रम शुरू किये गये हैं। संस्थान ने कई नवीन प्रक्रियाओं और उद्योग के सह उत्पादों और कचरे से उत्पादों को विकसित कर अपनी उपयोगिता साबित की है। इस दौरान संस्थान को कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से अवार्ड भी मिले। संस्थान ने बीते दस सालों में राजस्व सृजन में बीस गुना से भी अधिक वृद्धि की है। वर्ष 2012-13 में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का राजस्व सृजन जहां 30 लाख सालाना था, वहीं वर्ष 2022-23 तक यह बढ़ कर 640 लाख हो गया है। वहीं इस अवधि में संस्थान ने छात्रावासों के निर्माण, आउटडोर स्टेडियम, ओपन जिम और चिल्ड्रन पार्क जैसे विकास कार्य भी किये।

Link for Digital News

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने 10 वर्ष पूर्ण होने पर की प्रेसवार्ता।
- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक डॉ,नरेंद्र मोहन के 10 वर्ष पूर्ण होने पर की वार्ता।
- NSI को 10 साल में मिली नई पहचान: संस्थान का राजस्व 30 लाख से बढ़कर 640 लाख हुआ, चार नए कोर्स की हुई शुरुआत